Class - B.A - I (H) राज्य की प्रकृति
paper - I (वर्ग सिद्धांत)

Name of the Guest Teacher - Khushbu kumari,
dept. of Political science, V.S.J. college, Rajnagar, lnmu

राज्य की प्रकृति के संबंध में एक अन्य सिद्धान्त 'वर्ग सिद्धान्त' है। इस सिद्धान्त का प्रतिपादन कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंजिल्स के द्वारा किया गया है। मार्क्स राज्य को एक स्वाभाविक और नैतिक संस्था नहीं, बल्कि एक वर्गीय संस्था मानता है। मार्क्स राज्य के उदय का कारण वर्ग विभेद बतलाता है और राज्य की वर्गीय प्रकृति को स्पष्ट करते हुए कहता है कि आदिम साम्यवादी अवस्था में समाज के सदस्यों के बीच हितों का कोई संघर्ष न होने के कारण राज्य का कोई अस्तित्व नहीं था लेकिन दास-प्रथा के युग में स्वामी और दास के सम्बन्धों के उदय से स्थिति बदल गयी। स्वामी वर्ग के सदस्यों की संख्या बहुत कम थी। और बहुसंख्यक समाज के विरुद्ध अपनी स्थिति बनाये रखने के लिए इन्हें शक्ति का आश्रय लेना पड़ा। इसके द्वारा सेना, पुलिस न्यायालय, कारागार आदि की व्यवस्था की गयी और इन संस्थाओं पर शोषक वर्ग के समर्थक व्यक्तियों का अधिकार स्थापित हुआ। यहीं से राज्य संस्था का सूत्रपात हुआ। इस प्रकार राज्य संस्था का निर्माण एक वर्ग द्वारा दूसरे वर्ग पर नियन्त्रण रखने के लिए ही किया गया।

Scanned with CamScanner

सामन्तवादी युग में वह जमींदार किसान जनता के शोषण का साधन थी और आज के पूंजीवादी युग में पूंजीवादी वर्ग राज्य संस्था की सहायता से श्रमिक वर्ग शोषण करता है। मार्क्स और एंजिल्स के अनुसार राज्य एक वर्गीय संस्था है जिसका कार्य शोषक वर्ग के हितों की रक्षा करना और शोषित वर्ग के अधिकाधिक शोषण की ओर प्रवृत्त करना है।

मार्क्स का विचार है कि राज्य श्रमिकों पर अपना नियंत्रण बनाये रखने के लिए ही स्कूल और धार्मिक संस्थाओं का उपयोग भी करता है। शिक्षण संस्थाओं में हमें यह सिखलाया जाता है कि राज्य के आदेशों का पालन किया जाना चाहिए और समाज के गुणों को अपनाया जाना चाहिए। इसी प्रकार मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर आदि में हमें यह बतलाया जाता है कि राज्य के आदेशों का विरोध करना पाप है। राज्य को वर्ग विभेद की प्रकृति पर बल देते हुए मार्क्स कहता है कि वर्ग विभेद समाप्त होने और वर्गविहीन समाज की स्थापना हो जाने पर राज्य विलुप्त हो जाएगा।

राज्य की प्रकृति के वर्ग सिद्धान्त की प्रमुख मान्यताएं इस प्रकार हैं—

Scanned with CamScanner

Page No. ______
Date ______

(i) राज्य का उदय वर्ग संघर्ष की प्रवृत्ति का परिणाम है।

(ii) राज्य शक्ति पर आधारित है और राज्य अपनी शक्ति द्वारा पूंजीपति वर्ग के हितों की रक्षा का कार्य करता है।

(iii) राज्य प्रगतिशील शक्तियों का विरोधी है और उसके विकास में बाधक बनता है।

(iv) राज्य की सहायक संस्थाएं जो शैक्षणिक, धार्मिक सामाजिक परोपकारी क्षेत्र में कार्य करती हैं शोषक वर्ग के हितों की ही रक्षा करती है।

(v) सामाजिक दशाएं बदलने पर राज्य का स्वरूप परिवर्तित होता दिखायी देता है, किन्तु उसकी मूल प्रवृत्ति, शोषण की प्रवृत्ति बनी रहती है।

(vi) वर्ग विभेद समाप्त होने पर वर्गहीन समाज की स्थापना होने पर राज्य स्वतः ही विलुप्त हो जाएगा।

वर्ग सिद्धान्त की आलोचना —

(1) राज्य एक वर्गीय संगठन नहीं वरन् एक स्वाभाविक और नैतिक संगठन है।

(2) वर्तमान राज्य सर्वहारा वर्ग का शत्रु न होकर मित्र है।

(3) राज्य अस्थायी नहीं बल्कि स्थायी है।

(4) राज्य के विलीनीकरण की धारणा काल्पनिक है।

Scanned with CamScanner

Page No.
Date

निष्कर्ष —

राज्य की प्रकृति के वर्ग सिद्धान्त की आलोचना की जाती है और यह एक तथ्य है कि राज्य संस्था स्वाभाविक है और मानव स्वभाव तथा जीवन के साथ अनिवार्य रूप से जुड़ी होने के कारण यह सदैव बनी रहेगी, लेकिन इसके साथ ही यह एक तथ्य है कि वर्तमान समय का राज्य प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में साधन-सामग्न वर्ग के हितों का रक्षक बना हुआ है और राज्य शोषण यन्त्र के स्थान पर जनकल्याणकारी संस्था का रूप ग्रहण कर सके इसके लिए राज्य के ढाँचे और हमारी समस्त व्यवस्था में परिवर्तन नितान्त आवश्यक है।

Scanned with CamScanner